गुले नरजिस

मोहतरमा तनज़ीम ज़हरा नक़वी कनीज़ अकबपुरी साहेबा

महकी फ़िज़ाए खुल्द तो कहने लगे मलक
पत्तों की आड़ में गुले नरजिस छुपा न हो

किस क़दर बा अज़मत होगा वह इन्सान जो तमाम ख़ूबियों का सरचश्मा और तमाम अच्छे लोगों का वारिस है। सारी अज़मतों का मजमुआ, सारे अम्बिया व औलिया का आइन–ए–हयात, मासूमीन अलैहिमुस्सलाम की इस्मत का का पासदार, मज़हरे ईमान और जलव–ए–अमल है। हादियों और रहनुमाओं की हिदायत और ज़िम्मेदारियों को बेहतरीन नतीजे तक पहुँचाने वाला, सीरते मुस्तफवी और सूरते मुरतज़वी का हामिल है। अम्बिया व अइम्मा (अ0) की तबलीग़ात के अन्जाम तक पहुँचाने वाला, ख़ुदा के भेजे और बनाए हुए अक़ली व फितरी क़वानीन को नश्र करने वाला, और ज़मीन को फिस्क़ व फुजूर के बदले अद्ल व इन्साफ से पुर करने वाला है। हमारा ख़ालिसाना व मुख़लिसाना दुरूद व सलाम हो मुहम्मद व आले मुहम्मद पर ख़ास तौर से बक़िय्यतुल्लाहिल आज़म पर।

कितना बा बरकत होगा वह दिन, कितनी बा अहमियत होगी वह तारीख़, कितनी अज़ीम होगी वह घड़ी, कितनी ख़ुशगवार होगी वह फिज़ा जब 15 शाबानुल मुअज़्ज़म 255 हि0 या 256 हि0 को हज़रत मुहम्मद महदी (अ0) क़ाएम (अज0) आले मुहम्मद की विलादत बा सआदत हुई होगी।

जनाबे हकीमा ख़ातून ने रोज़े अव्वल ही एजाज़े इमामत को पहचान लिया। मख़फी पैदाइश का होना इस्मत का एजाज़ है।

आप फरमाती हैं:–

मैंने देखा बच्चा सिजदे में है और कह रहा है:– ''अश्हदु अन ला इलाहा इल लल्लाह व अन्ना जद्दी मुहम्मदन रसूलुल्लाह, व अन्ना अलिय्यवँ वलियुल्लाह।'' और इसी सूरत से तमाम अइम्मा के नाम बयान किये यहाँ तक कि आपकी नौबत आयी तो फरमाया:– ''ख़ुदाया मेरे अम्र को नतीजा बख़्श बना, मेरे क़दम साबित रख और ज़मीन को अद्ल व इन्साफ से भर दे।''

उसके बाद इमामे हसन असकरी (अ0) ने बच्चे को तलब किया आग़ोशे उलफत में लेकर फरमाया:– ''ख़ुदा के हुक्म से गुफ्तगू करो।'' बच्चे ने कहा ''अऊज़ुबिल्लाही मिनश्शैतानिर रजीम, बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम, वनजअलुहुम अइम्मतन वनजअलुहुमुल वारिसीन।'' ''और हमारा इरादा है कि ज़मीन पर कमज़ोर बना दिये जाने वालों पर एहसान करें और उन्हें ज़मीन पर इमाम और वारिस क़रार दें।''

हज़रते वली–ए–अस्र का पाक नाम ''मुहम्मद'' है और कुन्नियते मुबारका ''अबुलक़ासिम'' है चुनानचे पैग़म्बरे इस्लाम ने फरमाया कि:– हमारे आख़री जानशीन का नाम मेरे नाम पर और उसकी कुन्नियत भी मेरी कुन्नियत होगी।

आपके लक़बः हुज्जत, क़ायम, साहिबुज़्ज़मान, बक़िय्यतुल्लाह वगैरा हैं लेकिन आपका सबसे मश्हूर लक़ब ''महदी'' है। आपके वालिदे बुज़ुर्ग, जिनको हज़रत इमामे हसन असकरी (अ0) के नाम से याद किया जाता है, हमारे ग्यारहवें इमाम हैं और आपकी बुज़ुर्ग माँ के मुख़्तलिफ नाम जैसे सोसन, रेहाना, सैक़ल, किताबों में बताये गये हैं मगर ज़ियादा मश्हूर नाम नरजिस ख़ातून है।

आपकी पैदाइश हज़रत मूसा (अ0) की तरह छुपी रही है ताकि लोग शक व शुब्ह में न पड़ें ख़ास तौर से ईमान वाले पसोपेश में न आएँ इसलिए तमाम अम्बिया व अइम्मा ख़ास तौर से इमामे हसन असकरी (अ0) ने बाज़ राज़दार और कामिलुल ईमान अस्हाब से आपकी पहचान हर तरह से करवायी है। इमामे हसन असकरी (अ0) ने अपनी शहादत से पहले फरमाया कि:– ''महदी जो मेरा फरज़न्द है मेरे बाद इमाम और

हुज्जते ख़ुदा होगा। सबसे ज़्यादा हर एतेबार से पैग़म्बरे इस्लाम (स0) से मिलता हुआ होगा उसको ख़ुदा ग़ैबत में रखेगा और ग़ैबत भी लम्बी होगी।''

इमामे महदी के लिए दो ग़ैबतें हैं एक ग़ैबते सुग़रा और दूसरी ग़ैबते कुबरा। आपकी ग़ैबत हक़ीक़तन एक राज़े इलाही है फिर भी मुहक़्क़ीन ने रिवायात से इस्तेफादा करते हुए चन्द वज्हें बयान की हैं:–

1– दुश्मन से आपकी जान महफ़ूज़ रह सके और बक़िया मासूमीन (अ0) की तरह मक़्तूल व मज़लूम आप न हों ताकि ज़मीन हुज्जते ख़ुदा से ख़ाली न रहे।

2– ईमान के इम्तियाज़ात बयान हो सकें। हक़ीक़ी और असली शीआ और इस्लाम के वाक़ई चेहरे सामने आ सकें।

3– आप हरगिज़ किसी हाकिम ज़ालिम व जाबिर की बैअत न करें अगरचे तक़य्या ही क्यों न हो। ख़ुदावन्दे आलम का वादा यह है कि दीने इस्लाम को तमाम अदियान पर ग़लबा अता करे और यह सूरते हाल तक़य्या में मुमकिन नहीं है।

इमामे महदी (अ0) की ग़ैबत इमामे हसन असकरी (अ0) की शहादत के बाद से शुरु के 70 साल ग़ैबते सुग़रा कही जाती है। इसकी खुसूसियत यह है कि आपके 4 नाएबीन मुअय्यन थे और लोग उन्हीं के ज़रिए आपसे ताल्लुक़ रखते थे।

उसमान (रह0) बिन सईद मुहम्मद (रह0) बिन उसमान, हुसैन (रह0) बिन रूह, अली (रह0) बिन मुहम्मद समरी। यह सब लोग अपने ज़माने के राज़दार तरीन अफराद थे उनकी शख़सियतें इल्म, तक़वा, शुजाअत, सख़ावत, ज़ोह्द व वरअ् और ख़िदमते ख़ल्क़ जैसे औसाफ से मुत्तसिफ थीं।

अली बिन मुहम्मद समरी की वफात से पहले आपके पास तौक़ीअ् (ख़त) आयी जिसमें इमाम (अ0) ने फरमाया था:–

ऐ अली बिन मुहम्मद! अपने बाद किसी को नाएब न बनाना। छः रोज़ बाद तुम्हारा ''यौमे मौऊद'' (वादे का दिन) है।

मस्लहते ख़ुदावन्दी की बिना पर ग़ैबते सुग़रा ख़त्म हो जायगी और ग़ैबते कुबरा का सिलसिला जारी हो जाएगा और ऐसा ही हुआ।

इसके बाद कोई शख़्स मुअैय्यन नहीं था जिसको इमाम ने वकील व नायब बनाया हो और सीधे तौर पर मुलाक़ात की हो, अलबत्ता कुछ बाअज़मत अफराद जिन्होंने देखा है लेकिन मशिय्यते इलाही का यही तक़ाज़ा है कि कोई फौरन पहचान नहीं सका, इमाम की जानिब से जानने वालों और उलमा के पास तौक़ीआत और ख़ुतूत भी आए हैं। जिससे वाज़ेह होता है कि हिदायत का सिलसिला ख़त्म नहीं हो सकता।

इस्हाक़ बिन याक़ूब ने मुहम्मद बिन उसमान के ज़रिए इमाम (अ0) से सवाल किया कि:– ''ख़ास नाएबीन के बाद हम अपने मसाएल किस तरह हल करेंगे?''

इस्हाक़ बिन याक़ूब कहते हैं मैंने देखा इमाम (अ0) ने अपने मुबारक हाथ से इस तरह लिखा हुआ ख़त भेजा जिसका मज़मून यह है:– रावियाने किराम व उलमा व फुक़हाए दीन की तरफ रुजू करो उनसे मसाएल का हल दरयाफ्त करो क्योंकि वह तुम्हारे लिये मेरी हुज्जत हैं और मैं ख़ुदा की हुज्जत हूँ।

हदीसे मज़कूर उलमा व फुक़हाए दीन की अज़मत, उनकी जद्दोजेहद, इज्तेहाद व फुक़ाहत, इरफान व इल्म की अज़मत को बयान कर रही है। मासूमीन (अ0) का हर वक़्त ताल्लुक़ ज़ाते बारी ताला से है और उलमा–ए–रूहानी का ताल्लुक़ मासूमीन व मुक़र्रबीने ख़ुदावन्दे आलम से है।

इमामे अस्र (अ0) की इताअत और क़ानूने इस्लाम से इरतेबात का तक़ाज़ा यह है कि ग़ैबत में उनका दिफाअ किया जाए। सीरते अहलेबैते अतहार (अ0) को शेआरे हयात बनाने वाले उलमा–ए–रब्बानी की इताअत करें और उनकी आवाज़ पर लब्बैक कहें। उनके हम आवाज़ हो जाएँ, क़ुर्आन व इस्लाम के मसालेह और मनाफेअ् को अपने ज़ाती फायदों से आगे रखें।

इल्म हासिल करें और मुआशर–ए–इल्मी तैयार करें ताकि लश्करे वली–ए–अस्र की तादाद में इज़ाफा हो। ख़ुदाए बरहक़ से दुआ है कि इमाम (अ0) के ज़हूर में जल्दी फरमाए और हमें सच्चे मुन्तज़िरीने इमाम (अ0) में शुमार फरमाए। (इलाही आमीन)

□□□